लोकतंत्र की आत्मा है - संवाद

हरियाणा संवाद

पाक्षिक 16-31 मई 2021 www.haryanasamvad.gov.in अंक -18

'जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे तो सबल बन जाओगे।'
: स्वामी विवेकानंद

आपात काल में 'आयुष्मान योजना'

3

हाथों हाथ बिक रहे हैं जैविक उत्पाद

7

स्वयं सहायता समूह बनाकर हजारों महिलाएं हुई आत्मनिर्भर

8

कोरोना से जंग: जी जान से जुटी सरकार

विशेष प्रतिनिधि

कोरोना महामारी को रोकने और उससे निपटने के लिए राज्य सरकार के तमाम अधिकारी दिन रात मेहनत कर रहे हैं। मुख्यमंत्री मनोहरलाल स्वयं इस पूरे अभियान को लीड कर रहे हैं और हर रोज अधिकारियों से बैठकें कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विशेषज्ञों के अनुसार कोविड-19 मामलों में वृद्धि की आशंका है। इसलिए सभी उपायुक्तों को अब इस महामारी की रोकथाम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी और कोविड-19 प्रबंधन की तैयारियों जैसे टेस्टिंग सुविधा बढ़ाने, क्लिनिकल मैनेजमेंट पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ जन-जागरूकता गतिविधियां विशेष तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ानी होंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा अस्पतालों में सामान्य, आईसीयू और ऑक्सीजनयुक्त बैड की उपलब्धता तथा निर्बाध ऑक्सीजन आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाए हैं। उन्होंने जिला उपायुक्तों को मानव जाति की सेवा के भाव से काम करने और संक्रमण से बचाव के तरीकों के बारे में जनता को जागरूक करने के निर्देश दिए। साथ ही, ऑक्सीजन की समय पर आपूर्ति, बिस्तरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और टेस्टिंग सुविधाओं में तेजी लाने के लिए समर्पित प्रयास करने के भी निर्देश दिए।

मनोहर लाल ने यह भी निर्देश दिए कि अस्पतालों में ऑक्सीजन, बेड और दवाओं की नियमित ऑडिटिंग की जाए ताकि ऑक्सीजन की मांग व आपूर्ति के संबंध में वर्तमान और भविष्य की रणनीतियां बनाई जा सकें। उन्होंने जिला उपायुक्तों को निर्देश देते हुए कहा कि उपायुक्त स्वयं ऑक्सीजन की मांग और आपूर्ति की निगरानी करें और ऑक्सीजन टैंकर की अनलोडिंग जल्द से जल्द सुनिश्चित की जानी चाहिए।

उपचार में कोई कमी न रहने पाए

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में राज्य का ऑक्सीजन कोटा 257 मीट्रिक टन है और केंद्र सरकार से इस कोटा को बढ़ाकर 300 मीट्रिक टन करने का अनुरोध किया गया है। तदानुसार पूरे राज्य में निर्बाध ऑक्सीजन की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला उपायुक्त सुनिश्चित करें कि सभी स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ स्टेप डाउन मरीजों को कोविड केयर सेंटर में शिफ्ट करने को प्राथमिकता दी जाए, ताकि किसी भी गंभीर रोगी जो अस्पताल में दाखिला लेने के लिए संघर्ष कर रहा हो उसे जल्द से जल्द आवश्यक उपचार मिल सके।

मुख्यमंत्री ने उपायुक्तों को निर्देश दिए कि कोविड-19 पॉजीटिविटी दर को कम करने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में टेस्टिंग क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया जाए। इसके अलावा, आरटीपीसीआर टेस्ट के साथ-साथ हर जिले में एंटीजन टेस्ट करने पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि चूंकि ग्रामीण इलाकों में वायरस का प्रसार हो रहा है, इसलिए प्रत्येक गांव में स्वास्थ्य जांच कैंप लगाए जाएं।

ऑक्सीजन सिलेंडर रिफिल की सुविधा डोर-टू-डोर

प्रदेश में लोगों को डोर-टू-डोर ऑक्सीजन सिलेंडर रीफिल की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसके लिए मरीज या उनके परिजनों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के अतिरिक्त प्रधान सचिव डॉ. अमित अग्रवाल ने इस सम्बंध में जिला के नोडल अफसरों और जिला रेडक्रॉस सोसाइटी के सचिवों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

इसके लिए एक पोर्टल oxygenhry.in/ बनाया गया है। इस पोर्टल पर जाकर स्वयंसेवी संस्थाएं रजिस्ट्रेशन करेंगी, जिससे उनका लॉग इन बन जाएगा। जैसे ही इस पोर्टल पर जरूरतमंद मरीज ऑक्सीजन सिलेंडर के रीफिल के लिए रजिस्ट्रेशन करेगा तो उसका आवेदन स्वयंसेवी संस्था और रेडक्रॉस सोसाइटी दोनों के पास रिफलेक्ट होगा। रेडक्रॉस सोसाइटी या स्वयंसेवी संस्था में से कोई भी उक्त आग्रह को स्वीकार करेंगी तो आवेदन करने वाले मरीज के दिए मोबाइल नम्बर पर सूचना पहुंच जाएगी। आवेदन करने के दौरान आधार नम्बर और ऑक्सीजन लेवल के लिए ऑक्सीमीटर का फोटो भी अपलोड करना होगा। मरीज की उम्र और पता लिखना अनिवार्य होगा। एक मोबाइल नम्बर से एक दिन में एक बार ही आवेदन किया जा सकेगा। यह सुविधा 9 मई, 2021 से मिलना प्रारम्भ हो जाएगी।

'भय से मुक्त रहो, मन को संतुलित रखो'

स्वामी विवेकानंद का प्लेग मैनिफैस्टो

वर्ष 1898 में स्वामी विवेकानंद का यह 'प्लेग मैनिफेस्टो' प्रसारित हुआ था तब प्रसारण तंत्र की जेब, रेडियो व सीमित प्रिंट मीडिया के इलावा कमोबेश खाली थी। उस समय न सोशल मीडिया था, न दूरदर्शन, न ही चैनलों की भरमार।

इस बहुचर्चित और आज भी प्रासंगिक 'मैनिफेस्टो' (घोषणा पत्र) को तैयार करने में स्वामी विवेकानंद के साथ स्वामी सदानंद, भगिनी निवेदिता व कुछ अन्य प्रबुद्ध संन्यासी थे। यह घोषणा पत्र सबसे पहले बांग्ला भाषा और हिंदी में तैयार हुआ था। बाद में अंग्रेजी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी इसे प्रकाशित किया गया।

सबसे बड़ा संकट यह भी था कि तब न तो चिकित्सा सुविधाएं व्यापक स्तर पर उपलब्ध नहीं थी और न ही परीक्षणों व 'आर एंड डी' (शोध और विकास) सरीखी व्यवस्थाएं उपलब्ध नहीं थी। स्थापित मान्यताओं और देसी दवाओं के इलावा तीसरा हथियार संवेदनशीलता का था और चौथा प्रवचन एवं बौद्धिकता का था।

स्वामी बार-बार दोहराते, 'डर के खिलाफ़ अभियान चलाओ, मनोबल न गिरने दो और स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दो।'

हम भयभीत तो हैं मगर अभी तक जागरूक नहीं हैं। यदि कोरोना ने हमारी अर्थव्यवस्था को घाव दिए हैं, हमें शिक्षा, रोजगार, खेती, निर्माण, शोध, लेखन व कला संस्कृति के क्षेत्र में पीछे की ओर तगड़ा धक्का दिया है तो जवाबदेही कोरोना की नहीं, हमारी है। कोरोना सरीखे वायरस को जो माहौल चाहिए, वह हमने दिया। अब छाती पीटने से या एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने का कोई लाभ नहीं।

वर्ष 1899 की बात है। आज से ठीक एक सदी व 33 वर्ष पहले पूरा विश्व प्लेग की चपेट में आया था। तब युवा संन्यासी विवेकानंद ने एक 'घोषणा पत्र' जारी किया था। वही घोषणा पत्र आज 133 वर्ष बाद भी प्रासंगिक है। इस घोषणा पत्र को विवेकानंद द्वारा गठित एक समिति ने तैयार किया था। बाद में इस प्रारूप को अंतिम रूप दिया था स्वयं स्वामी ने।

उस घोषणा पत्र में स्वामी विवेकानंद ने कहा था, 'भय से मुक्त रहो। भय सबसे बड़ा पाप है। मन को संतुलित व प्रसन्न रखो। बल मिलेगा। मृत्यु वैसे भी अपरिहार्य है। इससे क्या डरना। आओ, सबसे पहले इस झूठे भय को छोड़ें। अपनी कमर कसें और सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करें। शुद्ध और स्वच्छ जिंदगी का महत्व समझें। और बाद में कुछ बातें उस करुणा निधान पर भी छोड़ें।'

उस घोषणा पत्र की कुछ अन्य बातें इस प्रकार थी-

» अपना घर, अपना कैम्पस, वस्त्र, बिस्तर और नालियां स्वच्छ रखें
» बासी और खराब हुआ भोजन न खाएं। इसके बजाय भले ही कम लें लेकिन ताज़ा और पौष्टिक भोजन लें। निर्बल शरीर अधिक रोग-प्रवण होता है।
» हमेशा मन प्रसन्न रखें। हर एक को एक बार मरना है। कायर मृत्यु की टीस बार-बार भुगतते हैं, केवल अपने मन के भय के कारण।
» डर उनको कभी नहीं छोड़ता जो अनैतिक साधनों से अपनी जीविका कमाते हैं या दूसरों को क्षति पहुंचाते हैं। इसलिए जब हम मृत्यु के बड़े भय के सामने हैं, हमें सब तरह के कदाचार से बचना है
» महामारी में हम क्रोध और लोभ से विरक्त रहें, भले आप गृहस्थ हों।
» अफवाहों पर ध्यान न दें।
» पीड़ित रोगियों के इलाज में हमारे अस्पताल में हमारी परिचर्या और निगरानी में सभी पंथों, जातियों और महिलाओं के शील (पर्दा) का आदर करते हुए कोई कोताही नहीं बरती जाएगी। धनिकों को भागने दीजिए! लेकिन हम गरीब हैं, हम गरीबों के दिल का दर्द समझते हैं। असहायों की सहायता ब्रह्मांड की मां स्वयं करती है। मां हमें विश्वास दिला रही है- डरो मत! डरो मत!

इस दौरान भगिनी निवेदिता उनके साथ थी। उनके प्रेरक व्याख्यान को सुनकर कई लोग आपद घड़ी से अपने शहर और समाज को बाहर निकालने के लिए आगे आए। इस पूरे काम को एक संगठित तरीके से अंजाम दिया गया।

कोरोना के खिलाफ सरकार का संघर्ष भी तभी असरकारी होगा जब उसके साथ समाज का पुरुषार्थ जुड़ेगा। अच्छी बात यह है कि स्वास्थ्य में मदद से लेकर विभिन्न तरह के दूसरे सहयोग के रूप में यह पुरुषार्थ अब पूरे देश में दिख रहा है। एक आस्थावान समाज की असली ताकत जीवटता है। बीसवीं सदी के मुहाने पर खड़े होकर यही संदेश स्वामी विवेकानंद ने भारत और शेष पूरी दुनिया को दिया था।

-डा. चंद्र त्रिखा

संपादकीय

हम होंगे कामयाब एक दिन

हरियाणा में हाल ही तक यद्यपि कोरोना-आपदा कुछ क्षेत्रों में गंभीर रूप धारण कर रही थी लेकिन अब धीरे-धीरे कोरोना-योद्धाओं ने इस घातक वायरस के खिलाफ़ अपने जुझारू तेवर तीखे किए हैं। प्रदेश के सभी मंत्री व उच्चाधिकारी इस समय मैदान में हैं। स्वयंसेवी संस्थाएं भी अब आगे आ रही हैं। प्रदेश की रैडक्रॉस सोसायटी ने लगभग 15 हज़ार 'वालंटियर्स' की एक सूची तैयार की है जो पूरी मुस्तैदी के साथ इस आपदा के खिलाफ जूझेंगे। इनमें से 2748 'वालंटियर्स' की सूचियां, उपायुक्तों को भेज दी गई है ताकि राशन, दवाई और खाद्य सामग्री सभी पीड़ित परिवारों के घर तक ये पहुंचा सकें। इनका मुख्य काम, सभी ज़रूरी वस्तुएं, यहां तक कि गैस सिलेंडर भी, उन परिवारों तक पहुंचाना है जो 'क्वारंटाइन' में हैं या बाहर जाने की स्थिति में नहीं हैं।

हरियाणा रेडक्रॉस सोसायटी ने भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी से 250 कंसंटेटर की डिमांड की है। इनमें से 40 हरियाणा को मिल गए हैं। इसी माह फरीदाबाद में 40 बिस्तर का नया अस्पताल भी तैयार हो गया है। इसमें रोगियों को काफी हद तक मदद मिल सकेगी। जब अन्य कंसंट्रेटर आ जाएंगे तो दूसरे जिलों में भी इनका वितरण किया जाएगा।

भारतीय रेडक्रॉस की ओर से जल्द ही और भी कंसंट्रेटर मिलने की संभावना है। ऐसे में जिस भी जिले से इनकी डिमांड आएगी, वहीं पर 20 से 40 बेड का अस्पताल तैयार कराया जाएगा। प्रदेश सरकार के सहयोग से रेडक्रॉस तेजी से अपने कार्य को कर रहा है।

इन जिलावार वालंटियरों की संख्या इस प्रकार है- अम्बाला 181, भिवानी 95, चरखी दादरी 50, फरीदाबाद 63, फतेहाबाद 429, गुरुग्राम 30, हिसार 231, झज्जर 74, जींद 39, कैथल 97, कुरुक्षेत्र 276, करनाल 43, मेवात, 86, नारनौल 26, पलवल 53, पंचकूला 183, पानीपत 133, रोहतक 43, रेवाड़ी 35, सिरसा 135, सोनीपत 125 और यमुनानगर 321 हैं।

कुल 15 हजार वालंटियर अपनी ड्यूटी के लिए तैयार हैं। कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण फिलहाल सीमित संख्या में ही प्रदेश के सभी जिलों में वालंटियरों को ड्यूटी सौंप जा रही है। जैसे-जैसे डिमांड आएगी, तुरंत वालंटियरों की संख्या को बढ़ा दिया जाएगा। रेडक्रॉस सोसायटी पहले भी प्रदेश में कोरोना से पॉजीटिव हुए लोगों के प्लाज्मा डोनेट करने का आह्वान करती रही है। ये वालंटियर, प्रदेश के आम जन का आह्वान करेंगे कि वे रक्त दान करें। क्योंकि फिलहाल कॉलेज बंद हैं, इस कारण रक्त दान शिविर नहीं लग रहे।

इस सारे जुझारू माहौल में ज़रूरत इस बात की है कि हम अनावश्यक भय से उभरें। यह भय ही है जिसके कारण हम अपने चारों ओर दीवार बनाने लगते हैं। दीवार बनाने का यह काम हमेशा चलता रहता है अपने चारों ओर दीवार बनाते रहने का असर हमारी जुझारू क्षमता पर पड़ता है। सदियों से चली आ रही कहावत भी आज चरितार्थ हो रही है कि 'घर ही मंदिर है', अतः घर में रहें, सुरक्षित रहें। यह एक ऐसी आपदा है, जिससे हमें स्वयं ही जूझना है।

- डा चंद्र त्रिखा

प्रधानमंत्री मोदी ने दिया संपत्तियों का मालिकाना हक

राष्ट्रीय पंचायतीराज दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली से हरियाणा के 1,308 गांवों के लोगों को उनकी संपत्तियों के मालिकाना हक के प्रोपर्टी-कार्ड देने का शुभारंभ किया। इसके अलावा, सात जिलों की पंचायतों को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में चंडीगढ़ से वर्चुअली हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला भी जुड़े।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देशभर की 313 पंचायतों को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों तथा सात राज्यों की 5,002 पंचायतों को 4 लाख 9 हजार प्रोपर्टी-कार्ड डिजिटली वितरित करने की शुरुआत की। इनमें हरियाणा के 1,308 गांवों के 1,76,579 लोगों को उनके मालिकाना हक के रूप में प्रोपर्टी-कार्ड दिया जाना प्रस्तावित है। विशेष बात यह है कि प्रधानमंत्री ने जिन पंचायतों को प्रोपर्टी कार्ड देने की शुरुआत की है उनमें हरियाणा की भागीदारी 26 प्रतिशत रही, जबकि देश में जिन लोगों को ये प्रोपर्टी कार्ड दिए जाने की पहल की गई है उनमें हरियाणा के लाभपात्रों की 43 प्रतिशत संख्या है जो कि प्रदेश के लिए गौरव की बात है।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल की पहल पर राज्य में 26 जनवरी 2020 से करनाल जिला के सिरसी गांव से 'लाल डोरा मुक्त गांव' योजना की शुरुआत देश में सबसे पहले की गई थी। इस योजना के तहत ग्रामीणों को उनकी संपत्तियों के प्रोपर्टी-कार्ड दिए गए।

इन पंचायतों को मिला सम्मान

- अंबाला जिला को वर्ष 2019-20 के लिए 'दीनदयाल उपाध्याय पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार' से सम्मानित किया।
- गुरुग्राम जिला के पटौदी खंड, कैथल जिला के सीवन खंड तथा रोहतक जिला के गांव काहनौर की पंचायत, सोनीपत जिला के गांव शामड़ी लोहचब तथा फरीदाबाद जिला के नरयाला गांव की पंचायत को भी 'दीनदयाल उपाध्याय पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार' से नवाजा गया।
- 'नानाजी देशमुख राष्ट्रीय गौरव ग्राम सभा पुरस्कार' जींद जिला की बधाना ग्राम पंचायत को मिला।
- अग्रिम रूप से ग्राम विकास की योजना तैयार करने के लिए 'ग्राम पंचायत विकास योजना पुरस्कार' से गुरुग्राम जिला की मिर्जापुर पंचायत को पुरस्कृत किया गया।
- 'बाल हितैषी ग्राम पंचायत पुरस्कार-2021' से रोहतक जिला की काहनौर पंचायत को सम्मानित किया गया।

स्वामित्व योजना

पिछले साल जिन छह राज्यों से 'स्वामित्व योजना' की शुरुआत हुई थी, वहां एक साल के भीतर ही इसका प्रभाव भी दिखने लगा है। 'स्वामित्व योजना' में ड्रोन से पूरे गांव का, सम्पत्तियों का सर्वे किया जाता है और जिनकी जो ज़मीन होती है, उसे उसका प्रॉपर्टी कार्ड 'संपत्ति-पत्र' भी दिया जाता है।

-संवाद ब्यूरो

'स्वामित्व योजना' से बढ़ेगा आपसी विश्वास

पंचायती राज दिवस ग्रामीण भारत के नवनिर्माण के संकल्पों को दोहराने का एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। गांव और गरीब को उसके घर का कानूनी दस्तावेज देने वाली 'स्वामित्व योजना' को पूरे देश में लागू किया गया है। पिछले वर्ष जिन स्थानों पर ये योजना प्रारंभ की गई वहां के अनेक साथियों को प्रॉपर्टी कार्ड भी दिए गए हैं। इसके लिए भी इस काम में जुड़े हुए और समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने का प्रयास करने वाले सभी साथियों का भी मैं बहुत-बहुत अभिनंदन और शुभकामनाएं देता हूं। 'स्वामित्व योजना' गांव और गरीब के आत्मविश्वास को, आपसी विश्वास को और विकास को नई गति देने वाली है।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

इंजीनियरिंग कार्यों की लागत दर अनुसूची का नया संस्करण

मुख्यमंत्री मनोहरलाल के अथक प्रयासों से राजकीय कामकाज में पारदर्शिता लाने की मुहिम जारी है। लोक निर्माण (भवन एवं सड़कें) विभाग ने इंजीनियरिंग कार्यों के लिए हरियाणा की दर अनुसूची-2021 का नया संस्करण जारी किया है। इस बारे में अधिसूचना जारी होने के साथ ही नई निविदाओं में ये दरें लागू हो जाएंगी।

हरियाणा की दर अनुसूची का पहला संस्करण वर्ष 1962 में प्रकाशित हुआ था। बाद में समय-समय पर आवश्यकतानुसार आधार दरों पर अधिकतम प्रीमियम निर्धारित किये जाते रहे। अंतिम बार वर्ष 1988 में इसे संशोधित किया गया था। जीएसटी लागू होने के बाद नई कर व्यवस्था की अवधारणा आ गई थी और इसे संशोधित करना आवश्यक था।

राज्य सरकार के निर्देश पर 12 नवम्बर, 2019 को लोक निर्माण (भवन एवं सडकें) विभाग के सलाहकार श्री राकेश मनोचा की अध्यक्षता में कमेटी का गठन किया गया था और लोक निर्माण, सिंचाई एवं जलसंसाधन तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभागों के इंजीनियरिंग-इन-चीफ को इस कमेटी में सदस्य के रूप में शामिल किया गया।

वर्तमान में निर्माण कार्यों में नई-नई तकनीकी तथा सामग्रियों का इस्तेमाल होने लगा है और इसी के अनुरूप कई नये कार्य मदों को भी इसमें शामिल किया गया है तथा इसके अलावा दरों को संशोधित करना भी जरूरी था। संस्करण का डिजिटल प्रारूप भी उपलब्ध रहेगा और डीएनआईटी और ठेकदारों के बिल ऑनलाइन तैयार करने की सुविधा होगी। साथ ही इंजीनियरिंग कार्यों से जुडें विभागों के कार्यों के निष्पादन में निश्चित रूप से पारदर्शिता आएगी, जो मुख्यमंत्री का विजन भी है।

कामकाज में परदर्शिता आएगी: सीएम

हरियाणा की दर अनुसूची-2021 के विमोचन अवसर पर मुख्यमंत्री ने विभाग के अधिकारियों को इसका संस्करण तैयार करने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इससे इंजीनियरिंग कार्यों में पारदर्शिता आएगी तथा ठेकेदारों के लिए नई दरें उपलब्ध होंगी।

-संवाद ब्यूरो

सलाहकार संपादक :	डा. चंद्र त्रिखा
सह संपादक :	मनोज प्रभाकर
संपादकीय टीम :	संगीता शर्मा, सुरेंद्र मलिक, मनोज चौहान
संपादन सहायक :	सुरेंद्र बांसल
चित्रांकन एवं डिज़ाइन :	गुरप्रीत सिंह
डिजिटल सपोर्ट :	विकास डांगी

हरियाणा सरकार ने आईटीआई पासआउट युवाओं में उद्यमिता को बढ़ावा देने की पहल की है। इससे प्रदेश के युवा रोजगार के लिए सरकारी विभागों और निजी उद्योगों की तरफ ताकने की बजाय अपना व्यवसाय स्थापित करके आत्मनिर्भर बन सकेंगे। इस मकसद को हासिल करने के लिए, जिला शिक्षुता समितियों का पुनर्गठन किया गया है और संबंधित जिला उपायुक्त की अध्यक्षता में इनका नाम बदलकर 'जिला शिक्षुता और आत्मनिर्भर समिति' करते हुए बैंक प्रतिनिधियों को भी कमेटी में शामिल किया गया है।

क्या करेगी कमेटी

- यह कमेटी शिक्षुता अधिनियम, 1961 के अंतर्गत प्रत्येक तीन माह में जिले में सभी प्रतिष्ठानों का सर्वे पूरा करवाएगी तथा शिक्षुता पोर्टल पर निर्धारित संख्या में सीटें सृजित करवाकर अप्रेंटिस लगवाएगी।
- कमेटी जिले में सभी योग्य प्रतिष्ठानों का शिक्षुता पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करवाएगी।
- सभी प्रतिष्ठानों में उनके कुल कर्मचारियों की संख्या के कम से कम दो-पांच प्रतिशत और अधिकतम 15 प्रतिशत की तक शिक्षुता अधिनियम, 1961 के अनुसार डेजिग्नेटेड एवं ऑप्शनल ट्रेड अप्रेंटिस लगाने के प्रयास करेगी।
- सहायक शिक्षुता सलाहकार द्वारा जिले में स्थित सभी प्रतिष्ठानों का सर्वे किया जाएगा और शिक्षुता अधिनियम,1961 लागू करने में कमी पाए जाने पर दोषी प्रतिष्ठान को नोटिस जारी करेगा।
- यह कमेटी जिले में स्थित प्रतिष्ठान या संस्थान की सुविधा अनुसार अधिनियम के तहत फ्रेशर शिक्षुओं के लिए बेसिक ट्रेनिंग की व्यवस्था के साथ-साथ शिक्षु लगने के इच्छुक उम्मीदवारों को ऑनलाइन पोर्टल पर रजिस्टर करवाने की व्यवस्था भी करेगी।
- जिले में स्थित सभी निजी प्रतिष्ठानों द्वारा हरियाणा के निवासी युवाओं को रोजगार देने के कार्य की निगरानी करेगी।
- जिले की आईटीआई या हरियाणा कौशल विकास मिशन की योजनाओं के तहत कौशल प्रमाण पत्र धारक युवाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रोत्साहन एवं सुविधाएं प्रदान करेंगी तथा बैंक से ऋण दिलवाने में भी मदद करेगी।

जिला उद्यमी पुरस्कार

यह कमेटी प्रत्येक वर्ष जिला उद्यमी पुरस्कार के लिए सफल उद्यमियों के नाम का नामांकन करेगी और हर महीने बैठक आयोजित कर योजना की प्रगति की समीक्षा करेगी। इसके अलावा, अप्रेंटिस लगाने, रोज़गार दिलवाने व सफल उद्यमी बनाने के लक्ष्य के प्रति समिति के प्रदर्शन की मुख्य सचिव द्वारा वर्ष में दो बार समीक्षा की जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने बी.पी.एल. परिवारों के होम आईसोलेसन में रहने वाले कोरोना मरीजों को हरियाणा सरकार द्वारा एकमुश्त 5,000 रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

मंडियों में पहली अप्रैल से 3 मई तक कुल 83.53 लाख टन गेहूं की आवक हुई, जिसमें से 80.56 लाख टन गेहूं की खरीद हुई। 3 मई तक लगभग 10,452 करोड़ रुपए की अदायगी किसानों के खातों में की गई।

आपात काल में 'आयुष्मान योजना'

कोरोना संक्रमण को लेकर हालात अच्छे नहीं है। हालांकि सरकार संक्रमित मरीजों के उपचार के लिए जी जान से जुटी है लेकिन फिर भी मरीज व उसके परिवारों का इस पर काफी खर्च हो रहा है। समस्या उन गरीब परिवारों के लिए अधिक है जिनकी आय के स्रोत नाकाफी हैं। केंद्र सरकार ने ऐसे परिवारों की मदद के लिए 'आयुष्मान भारत योजना' चलाई है। योजना के तहत ऐसे परिवारों को संबंधित अस्पतालों में पांच लाख रुपए तक के इलाज की निशुल्क सुविधा प्रदान की जाती है। फिलहाल इस योजना का लाभ गरीब परिवारों के लिए है, बाद में इस योजना के दायरे में निम्न मध्य वर्ग, मध्य वर्ग और ऊपरी मध्य वर्ग के लोगों को भी लाया जाएगा।

आयुष्मान भारत योजना का मकसद गरीब, वंचित ग्रामीण परिवारों और शहरी श्रमिकों के परिवारों की चिह्नित कैटेगरी को स्वास्थ्य बीमा का लाभ देना है। इसके तहत सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में इलाज कराया जा सकेगा।

आयुष्मान भारत योजना कार्ड

कार्ड डाउनलोड करने के लिए निम्न स्टेप फॉलो करें-

- सबसे पहले आयुष्मान भारत की क्लाउड वेबसाइट pmjay.csccloud.in पर विजिट करें।
- वेबसाइट में विजिट करने के बाद आपको होम पेज पर लॉगिन का ऑप्शन नजर आएगा।
- उस ऑप्शन पर ईमेल आईडी और पासवर्ड डालकर साइन इन के बटन पर क्लिक करके साइन इन कर लें।
- साइन करने के बाद आधार कार्ड का नंबर डालें।

कार्ड कौन बनवा सकता है

जो भी नागरिक इस योजना का पात्र है, उसे आयुष्मान कार्ड दिया जाता है। इस कार्ड को गोल्डन कार्ड भी कहा जाता है। अगर किसी पात्र व्यक्ति का यह कार्ड नहीं बना है तो वह अस्पताल में भर्ती होने के समय अस्पताल में मौजूद प्रधानमंत्री आरोग्य मित्र से मिलकर अपना कार्ड बनवा सकता है।

योजना में अपना नाम कैसे देखें

- अपने मोबाइल फोन में आयुष्मान भारत की ऑफिसियल वेबसाइट mera.pmjay.gov.in को ओपन करना है।
- इसके बाद आपको अपना मोबाइल नंबर लिखकर सामने दिए गए कैप्चा कोड को भरना है।
- इससे आपके एंटर किए गए मोबाइल में छह डिजिट का एक ओटीपी आएगा जिसे आपको इस साईट में एंटर कर देना है।

योजना की मुख्य विशेषताएं

- यह योजना पूरी तरह से सरकार द्वारा वित्त-पोषित दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा/आश्वासन योजना है।
- 10.74 करोड़ से भी अधिक गरीब व वंचित परिवार (या लगभग 50 करोड़ लाभार्थी) इस योजना के तहत लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
- यह योजना सेवा संस्थान अर्थात अस्पतालों में लाभार्थी को स्वास्थ्य सेवाएं निःशुल्क प्रदान करती है।
- इस योजना के तहत अस्पताल में भर्ती होने से 3 दिन पहले और 15 दिन बाद तक का नैदानिक उपचार, स्वास्थ्य इलाज व दवाइयां मुफ्त उपलब्ध होती हैं।
- इस योजना के तहत परिवार के आकार, आयु या लिंग पर कोई सीमा नहीं है।
- इस योजना के तहत पहले से मौजूद विभिन्न चिकित्सीय परिस्थितियों और गंभीर बिमारियों को पहले दिन से ही शामिल किया जाता है।
- यह एक पोर्टेबल योजना हैं। लाभार्थी इसका लाभ पूरे देश में किसी भी सार्वजनिक या निजी सूचीबद्ध अस्पताल में उठा सकते हैं।
- इस योजना में लगभग 1,393 प्रक्रियाएं और पैकिज शामिल हैं जैसे की दवाइयां, आपूर्ति, नैदानिक सेवाएं, चिकित्सकों की फीस, कमरे का शुल्क, ओ-टी और आई-सी-यू शुल्क इत्यादि जो मुफ्त उपलब्ध हैं।

योजना में शामिल होने की योग्यता

- ग्रामीण इलाके में कच्चा मकान, परिवार में किसी व्यस्क (16-59 साल) का नही होना, परिवार की मुखिया महिला हो, परिवार में कोई दिव्यांग हो, अनुसूचित जाति/जनजाति से हो और भूमिहीन व्यक्ति/दिहाड़ी मजदूर।
- इसके अलावा ग्रामीण इलाके के बेघर व्यक्ति, निराश्रित, दान या भीख मांगने वाले, आदिवासी और क़ानूनी रूप से मुक्त बंधुआ आदि खुद आयुष्मान भारत योजना में शामिल हो जायेंगे।

शहरी इलाके के लिए

भिखारी, कूड़ा बीनने वाले, घरेलू कामकाज करने वाले, रेहड़ी-पटरी दुकानदार, मोची, फेरी वाले, सड़क पर कामकाज करने वाले अन्य व्यक्ति, कंस्ट्रक्शन साईट पर काम करने वाले मजदूर, प्लंबर, राजमिस्त्री, मजदूर, पेंटर, वेल्डर, सिक्योरिटी गार्ड, कुली और भार ढोने वाले अन्य कामकाजी व्यक्ति स्वीपर, सफाई कर्मी, घरेलू काम करने वाले, हैंडीक्राफ्ट का काम करने वाले लोग, टेलर, ड्राईवर, रिक्शा चालक, दुकान पर काम करने वाले लोग आदि आयुष्मान भारत योजना में शामिल होंगे।

-संवाद ब्यूरो

बीपीएल परिवार के मरीजों के लिए आर्थिक मदद

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने बीपीएल परिवारों के कोरोना मरीजों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की घोषणा की है, ताकि कोई भी जरूरतमंद व गरीब व्यक्ति पैसों की कमी के कारण कोरोना महामारी से जान न गंवाए।

राज्य सरकार प्रदेश के निजी अस्पतालों में ऑक्सीजन या आईसीयू बेड पर उपचाराधीन बीपीएल परिवारों के कोरोना मरीजों के लिए प्रतिदिन प्रति मरीज 5,000 रुपए (अधिकतम 7 दिन) यानी 35,000 रुपए की सहायता देगी।

निजी अस्पतालों के लिए भी प्रतिदिन प्रति मरीज 1,000 रुपए या अधिकतम 7,000 रुपए तक की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की। ताकि निजी अस्पतालों में हरियाणा के कोरोना मरीजों को दाखिला देने में प्राथमिकता मिल सके। इस प्रकार, बीपीएल परिवारों के कोरोना मरीजों के लिए 42,000 रुपए की वित्तीय सहायता मिलेगी।

उपचार व बेड के रेट तय

राज्य के निजी अस्पतालों में उपचार करवाने वाले कोरोना मरीजों के लिए बेड व अन्य सुविधाओं के रेट फिक्स किए गए हैं। राज्य में इस समय 42 निजी अस्पताल कोविड मरीजों का उपचार कर रहे हैं। सरकार ने एनएबीएच व जेसीआई मान्यता प्राप्त अस्पतालों में आइसोलेशन बेड का 10,000 रुपए, बिना वेंटीलेटर के आईसीयू बेड का 15,000 रुपए तथा वेंटिलेटर युक्त आईसीयू बेड का 18,000 रुपए प्रतिदिन की दर से रेट तय किए हैं। इसी प्रकार बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में आइसोलेशन बेड का 8,000 रुपए, बिना वेंटीलेटर के आईसीयू बेड का 13,000 रुपए तथा वेंटिलेटर युक्त आईसीयू बेड का 15,000 रुपए प्रतिदिन की दर से रेट तय किए हैं।

मुख्यमंत्री परिवार समृद्धि योजना

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने मुख्यमंत्री परिवार समृद्धि योजना के लिए निर्धारित कल्याणकारी योजनाओं के प्रीमियम का भुगतान चरणबद्ध तरीके से लागू करने के निर्देश दिये हैं।

योजना के अनुसार पात्र परिवारों के लिए प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री किसान, लघु व्यापारी व श्रमिक मानधन योजना, फसल बीमा योजना आदि के प्रीमियम पर सालाना 8 हजार रुपए की राशि प्रति परिवार खर्च की जानी है।

उन्होंने कहा कि हमें प्रदेश के हर परिवार के आर्थिक उत्थान और मजबूती के लिए कार्य करना है। सुरक्षा बीमा योजना के तहत परिवार के सभी सदस्यों के फार्म भरवाये जाएं। इसका प्रीमियम जो कि प्रति व्यक्ति 12 रुपए सालाना है उसका भुगतान पहले खाता धारक करेगा, जिसे बाद में सरकार द्वारा उसके खाते में डाल दिया जाएगा। इस योजना में 2 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा लाभ 18 से 70 वर्ष तक की आयु के लाभार्थियों को दिया जाता है।

प्रदेश सरकार गरीब व जरूरतमंद परिवारों को प्रति सदस्य 5 किलो गेहूं मुफ़्त उपलब्ध कराएगी। मई व जून माह में करीब एक करोड़ 23 लाख सदस्यों को गेहूं दिया जाएगा। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने इस बात की जानकारी दी।

राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र हिसार में स्थित है। इसकी स्थापना पंचवर्षीय योजना में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा की गई। जिसका उद्देश्य अश्वों का स्वास्थ्य एवं उत्पादन केक्षेत्र में अनुसंधान करना है।

जीत जाएंगे हम ... ...

मनोज प्रभाकर

कोरोना के अप्रत्याशित हमले से हर कोई स्तब्ध है। इस हमले की किसी को आशंका नहीं थी, न सरकार को और न आम आदमी को। पहले हमले के बाद हुए सामान्य हालात से हर कोई निश्चिंत था कि महामारी का बुरा दौर बीत गया है। उस संकट के दौर से निकलने में बेशक अवाम को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन उससे पार पा चुके थे। रोजी रोटी कमाने वाले अपने अपने काम पर लौट आए थे। शैक्षणिक, व्यापारिक व अन्य राजकीय गतिविधियां अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर थीं। अप्रैल माह में अचानक हुए कोरोना के पलटवार से जनजीवन एक बार फिर बाधित है।

हरियाणा सरकार ने अचानक आई प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए रातों-रात युद्धस्तर पर बचाव कार्य शुरू किए हुए हैं। खुद मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने दिन-रात मेहनतकर बचाव कार्यों में तेजी लाने के कामयाब प्रयास किए हैं। उन्होंने एक सप्ताह के भीतर प्रदेश के तमाम प्रमुख चिकित्सा संस्थानों का दौरा किया, अधिकारियों व चिकित्सकों से बैठकें की। इतना ही नहीं कोरोना के मरीजों के उपचार में कोई कमी न रह जाए इसके लिए केंद्र व अन्य एजेंसियों की तत्काल मदद भी ली। अस्थाई अस्पताल खुलवाए, आक्सीजन व आवश्यक दवाइयों की आपूर्ति सुनिश्चित की।

मुख्यमंत्री के अलावा उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला, स्वाथ्य मंत्री अनिल विज व अन्य सदस्यों ने अपनी अपनी जिम्मेवारियों पर बखूबी निर्वहन किया है। प्रदेश के अधिकांश आईएएस, आईपीएस, एचसीएस व अन्य अधिकारी व कर्मचारी उन्हें सहयोग दे रहे हैं। आपदा की इस स्थिति में न केवल सरकारी पक्ष के नेता बल्कि विपक्ष के नेता व कार्यकर्ता भी आपसी वैमनस्य भुलाकर मरीजों की सेवा में लगे हैं। अनेक सामाजिक संस्थाएं भी सरकार का सहयोग कर रही हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं में अथक मेहनत से जुटे डाक्टरों व अन्य पैरामेडिकल स्टाफ की सेवाओं की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। मानवता की सेवा में जुटे इन वीरों पर देश प्रदेश की तमाम जनता नाज कर रही है। अपनी जान की परवाह न करते हुए ये चिकित्सावीर कोविड के मरीजों का उपचार कर रहे हैं। राज्य सरकार की ओर से लगातार युद्धस्तर पर चिकित्सा तैयारियां की जा रही हैं। प्रदेश में जिस प्रकार का चिकित्सा ढांचा तैयार हो गया है, उम्मीद है उससे हम हर हाल में कोरोना की कथित तीसरी लहर का मुकाबला कर लेंगे। न केवल मुकाबला करेंगे बल्कि उसे पराजित भी करेंगे।

आक्सीजन को लेकर आत्मनिर्भर होते अस्पताल

आक्सीजन के मामले में सरकारी अस्पतालों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सरकार द्वारा युद्ध स्तर पर कार्य चल रहा है। केन्द्र सरकार की सहायता से प्रदेश में 60 ऑक्सीजन प्लांट लगाये जाएंगे जिनकी शुरुआत हो चुकी है। ज्यादातर प्लांट राज्य के 30, 50, 100 और 200 बिस्तरों की क्षमता वाले विभिन्न सरकारी अस्पतालों में स्थापित किये जायेंगे। पंचकूला, अंबाला, फरीदाबाद और हिसार, करनाल व सोनीपत में ऑक्सीजन उत्पादन प्लांट लगभग शुरू हो चुके हैं।

स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने सभी प्राइवेट अस्पतालो को अपनी-अपनी जरूरत के हिसाब से ऑक्सीजन उत्पादन प्लांट लगाने के लिये कहा है। यह कार्य अति शीघ्रता से किया जाना चाहिए। कुछ अस्पताल बड़े हैं, वे अपने निर्धारित समय के अनुसार तेजी से प्लांट लगाने का काम करेंगे ताकि किसी भी क्षेत्र में लोगों को ऑक्सीजन की कमी का सामना न करना पड़े। यदि कोई प्राइवेट अस्पताल ऑक्सीजन प्लांट नही लगायेगा तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जायेगी।

विज ने बताया कि लि॰ड ऑक्सीजन के 1000 लीटर क्षमता के दो टैंकर अम्बाला शहर के नागरिक अस्पताल और छावनी अस्पताल में स्थापित किये जायेंगे, इस पर शीघ्रता से कार्य जारी है। प्लांट को स्थापित करने में मुख्य भूमिका अदा करने वाले मौके पर उपस्थित प्रो0 जोगेन्द्र ने बताया कि प्लांट में ऑक्सीन उत्पादन का कार्य शुरू हो चुका है। प्रतिदिन 40-45 ऑक्सीजन के बड़े सिलेंडर के बराबर ऑक्सीजन तैयार हो रही है। यह ऑक्सीजन सीधे मरीज के बैड तक पंहुचे, ऐसी व्यवस्था की गई है।

इंजेक्शन वितरण के लिए कमेटी

रेमेडीसविर और टोसीलुइमाब इंजेक्शन के तर्कहीन उपयोग को रोकने के लिए जिलों में सीएमओ की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। निजी अस्पताल इन दवाओं को प्राप्त करने के लिए इस समिति से संपर्क करेंगे और दवाओं के वितरण के लिए अंतिम निर्णय समिति द्वारा ही लिया जाएगा।

सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में दाखिल मरीज के लिए टॉसिलिजूमैब टीके के आवश्यकता अनुसार वितरण के लिए तीन सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। इसमें कोविड-19 के राज्य नोडल अधिकारी डॉ ध्रुव चौधरी को कमेटी का चेयरमैन बनाया है। इसके अलावा वरिष्ठ कंसलटेंट डॉ राजीव बडेरा तथा मेदांता की वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर सुशीला कटारिया को कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया है। यह समिति टीके के वितरण व अन्य संबंधित मामलों को लेकर मानदंड तय करेगी।

हरियाणा ने केंद्र सरकार से 20 हजार रेमिडेसिविर इंजेक्शन की मांग की थी, जिनमें से चार अप्रैल तक 12,700 इंजेक्शन मिल गए थे। इसके अलावा, केंद्र सरकार से 160 टोसीलुइमाब मिले, इनमें से 80 इंजेक्शन निजी अस्पतालों और 80 इंजेक्शन सरकारी अस्पतालों को मुहैया कराए गए।

ऑक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति

राज्य सरकार प्रदेश में ऑक्सीजन की आपूर्ति सुनिश्चित करने में कोई कसर नही छोड़ रही है। ऑक्सीजन सप्लाई की निगरानी के लिए हरियाणा सचिवालय चंडीगढ़ में एक राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम बनाया गया। प्रदेश का ऑक्सीजन कोटा 156 मीट्रिक टन से बढ़ाकर 162 मीट्रिक टन किया गया, फिर बढ़ाकर 232 मीट्रिक टन किया, जिसे पुनः बढ़ाकर 257 मीट्रिक टन कर दिया गया है।

प्रदेश में अलग-अलग 5 जगहों - राउरकेला, जमशेदपुर, पानीपत, हिसार और रूड़की से लगभग 232 मीट्रिक टन ऑक्सीजन प्रतिदिन आ रही है। इंडस्ट्रीयल प्लांट्स को ऑक्सीजन गैस अस्पतालों में उपलब्ध करवाने के सख्त निर्देश दिये गये हैं, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न 13 जिलों में स्थित कुल 22 प्लांट्स से ऑक्सीजन गैस को सिलैण्डरों में भरकर सप्लाई दी जा रही है।

बिस्तरों की उपलब्धता में तेजी

प्रदेश के 22 जिलों में कुल 526 जिला कोविड केंद्र चल रहे हैं, जिनमें 45 हजार 8 6 बेड की व्यवस्था की गई है। पीजीआई रोहतक में 1000 और फरीदाबाद में 200 ऑक्सीजन बेड उपलब्ध कराए जा रहे हैं। हिसार में 500 बेड तथा पानीपत रिफाइनरी में भी 500 बेड के अस्पताल जल्द स्थापित होंगे। गुरुग्राम में मेदांता ग्रुप और मैनकाइंड फार्मा द्वारा ' मशः 100 बिस्तरों वाला और 70 बिस्तरों वाला अस्पताल स्थापित किया जाएगा।

हरियाणा सरकार राज्य बीमा न्यास के माध्यम से एक सर्व समावेशी बीमा योजना शुरू करने करेगी। इसमें दुर्घटना या किसी अनहोनी घटना में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर विस्तृत बीमा कवर उपलब्ध करवाया जाएगा।

हरियाणा में भारत सरकार की राष्ट्रीय टेली-परामर्श सेवाओं के तहत ऑनलाइन स्टे-होम ओपीडी, ई-संजीवनी ओपीडी शुरू की गई है और मई, 2020 से लागू है।

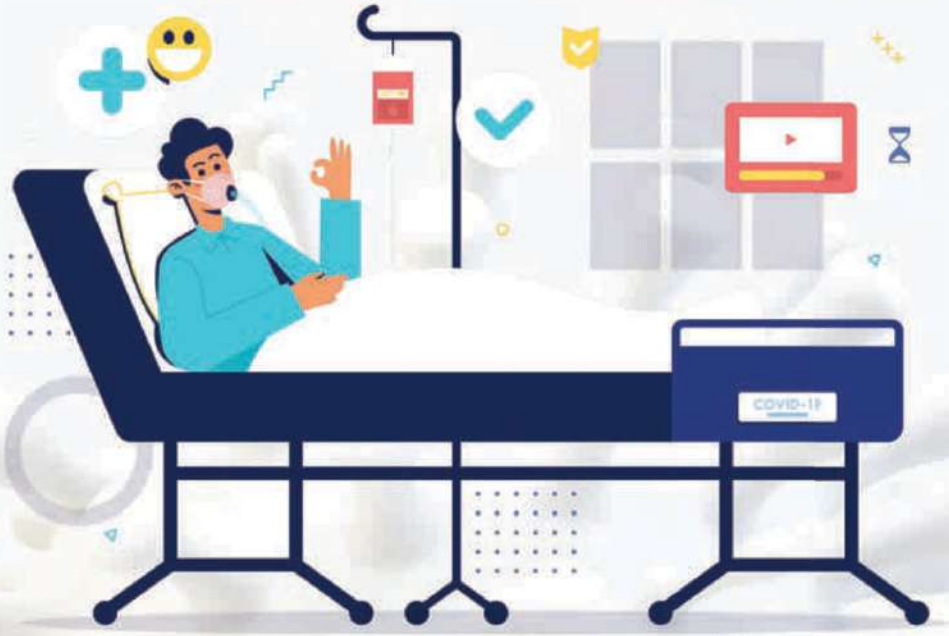

शासन प्रशासन का सहयोग करे जनताः सीएम

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने कहा कि संकट की इस घड़ी में प्रदेश के लोगों के साथ पूरा शासन-प्रशासन है। प्रदेश की जनता स्वयं भी मिलकर कार्य करें ताकि हम सब मिलकर इस महामारी को हरा सकें। उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि घरों से बाहर तभी निकलें जब कोई बहुत जरूरी कार्य हो और जब भी निकलें मास्क अवश्य पहनें। एक दूसरे से दूरी बनाकर रखें। कोरोना को हम घर पर रहकर ही हरा सकते हैं।

डॉक्टरों व पैरामेडिकल स्टाफ का रहना-खाना मुफ्त

हरियाणा सरकार ने कोरोना महामारी में जनता की सेवा में लगे डॉक्टरों, पैरामेडिकल व आवश्यक सेवाओं संबंधित स्टाफ के लिए अहम निर्णय लिया है। सरकार ने प्रदेशभर में लोक निर्माण विभाग के सभी विश्राम गृहों में डॉक्टरों, पैरामेडिकल व आवश्यक सेवाओं से जुड़े स्टाफ का रहना व खाना मुफ्त किया है।

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि इससे कोरोना की संकट की घड़ी में प्रदेश के नागरिकों की सेवा में लगे यह कर्मचारी घर ना जाकर अब पीडब्ल्यूडी के रेस्ट हाउस में मुफ्त में रह सकेंगे। इससे उनमें संक्रमण फैलने का भय भी कम होगा और उन्हें रहने के लिए उचित सुविधा भी मिलेगी।

पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस जिला उपायुक्त और सीएमओ के अधीन रहेंगे और इस बारे में सरकार ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश भी जरी कर दिए हैं।

मेडिकल व पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती शीघ्रः विज

अनिल विज ने कहा कि सरकार प्रदेश में चिकित्सकों व पैरामेडिकल स्टाफ की कमी को पूरा करने के लिए शीघ्र ही नई भर्ती करने की प्रक्रिया शुरू करेगी। प्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में पढ़ रहे पीजी व एमबीबीएस फाइनल के करीब 1400 विद्यार्थियों को राज्य के अस्पतालों में सेवा देने के आदेश दे दिए गए हैं।

गरीब परिवारों को मुफ्त राशन

प्रदेश में रहने वाले सभी जरूरतमंद और गरीब परिवारों को प्रति परिवार 5 किलो गेहूं मुफ्त मिलेगा, ताकि संकट की इस घड़ी में कोई भूखा न रहे। सामाजिक संगठनों और अन्य एनजीओ के पुराने और नए लोगों से आग्रह किया गया है कि वे हर गरीब परिवार के घर में मुफ्त राशन के वितरण के लिए आगे आएं। नए संगठन के लिए पंजीकरण शुरू हो चुका है। इसके अलावा सभी बीपीएल और अन्य कार्डधारकों को भी मुफ्त राशन मिलेगा।

कोविड टेस्ट के रेट तय

राज्य सरकार की ओर से कोविड टेस्ट के रेट तय किए गए हैं। आरटी पीसीआर के लिए 450 रुपए, रैपिड एंटीजन के लिए 500 रुपए तथा एलिसा टेस्ट के लिए 250 फिक्स किए हैं। स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा कि इन तय रेट्स से अधिक यदि कोई भी अस्पताल या लैब मरीज से पैसे लेता पाया जाता है तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी।

आक्सीजन का कोटा बढ़ाया गया

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने हाल ही में पीजीआईएमएस रोहतक में प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक ली और उनसे कोरोना महामारी से निपटने के लिए किए जा रहे कार्यों की रिपोर्ट प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने संस्थान में उपचाराधीन मरीजों की सुविधाओं के बारे में भी हेल्थ यूनिवर्सिटी के कुलपति से रिपोर्ट ली। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा राज्य के लिए 162 मीट्रिक टन ऑक्सीजन का कोटा निर्धारित है हमने इस कोटे को बढ़ाकर 200 मीट्रिक टन तक कराया है। इसके अतिरिक्त 240 मीट्रिक टन ऑक्सीजन के लिए केंद्र सरकार को आवेदन किया है। उन्होंने कहा कि 5 मीट्रिक टन लिक्विड ऑक्सीजन उद्योगपति नवीन जिंदल ने भेजने की बात कही है और उन्होंने कहा है कि हम प्रदेश की जनता के लिए ऑक्सीजन की कमी नहीं होने देंगे।

उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के संकट को देखते हुए पीजीआईएमएस, रोहतक में अतिरिक्त 650 बेड की व्यवस्था की जा रही है जबकि पहले पीजीआईएमएस में कोरोना मरीजों के लिए 350 बेड की व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में 1250 बेड की व्यवस्था और की जा रही है तथा 500-500 बेड की व्यवस्था करने के लिए जगह चिन्हित कर ली गई है।

फरीदाबाद के छायंसा गांव में वर्षों से बंद पड़े गोल्ड फील्ड मेडिकल कॉलेज को हरियाणा सरकार ने टेकओवर कर लिया है। उन्होंने कहा कि छायंसा मेडिकल कॉलेज में बनने वाले अस्पताल में डॉक्टरों का स्टाफ आर्मी का आएगा।

पुलिन ने दी इनोवा गाड़ियां

हरियाणा पुलिस ने सेवा-सुरक्षा-सहयोग के नारे को मूर्तरूप देते हुए कोरोन संक्रमित रोगियों की सहायता के लिए पहल की है। पुलिस की 440 'कोविड-19 अस्पताल परिवहन सेवा' (इनोवा गाडिया) जरूरतमंद संक्रमितों को निःशुल्क घर से अस्पताल और वापिस घर लेकर जाएंगी।

पुलिस महानिदेशक मनोज यादव ने बताया कि प्रत्येक जिले में सं मितों को नि. शुल्क परिवहन सेवा के लिए 20 टोयोटा इनोवा एसयूवी दी जा रही हैं। एम्बुलेंस की कमी और निजी एम्बुलेंस सेवा प्रदाताओं द्वारा ओवरचार्जिंग की सूचना के बाद ये वाहन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोशिश की जा रही है कि कोई भी मेडिकल सेवा से वंचित न रहे। आपातकालीन स्थिति में पुलिस के ये वाहन मरीजों को मुफ्त परिवहन सेवाएं प्रदान करते हुए संक्रमित व्यक्तियों को राहत देने के कार्य करेंगें।

ऑक्सीजन व रेमेडिसविर की कालाबाजारी में 45 गिरफ्तार

कोविड-19 के गंभीर रूप के बीच ऑक्सीजन, ऑक्सीजन सिलेंडर और रेमेडिसविर इंजेक्शन की कालाबाजारी के मामलों में अब तक 21 एफआइआर दर्ज करते हुए कुल 45 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों से 77 ऑक्सीजन सिलेंडर तथा 101 रेमेडिसवीर इंजेक्शन भी बरामद किए गए। डीजीपी मनोज यादव ने कहा कि 23 अप्रैल के बाद से हरियाणा के छह अलग-अलग जिलों में ऑक्सीजन और ऑक्सीजन सिलेंडरों की कालाबाजारी के सिलसिले में कुल 8 एफआईआर दर्ज की गई हैं। इन मामलों में 12 अभियुक्तों को गिरफ्तार करते हुए 77 ऑक्सीजन सिलेंडर की रिकवरी की गई। रेमेडिसविर इंजेक्शन की कालाबाजारी के संबंध में आठ अलग-अलग जिलों में 13 प्राथमिकी दर्ज करते हुए 33 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

कालाबाजारी की इन नंबर पर दें सूचना

डीजीपी ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि रेमेडिसविर इंजेक्शन सहित अन्य जीवन रक्षक दवाओं व ऑक्सीजन सिलेंडर की कालाबाजारी की सूचना मोबाइल नंबर 7087089947 और टोल फ्री नंबर 1800-180-1314 पर पुलिस के साथ साझा करें। आरोपियों के खिलाफ कानून अनुसार कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

आयुर्वेदिक टेलीमेडिसिन की सुविधा

कोरोना के मरीजों के लिए आयुर्वेदिक टेलीमेडिसिन की सुविधा शुरू की है। राज्य का कोई भी इच्छुक व्यक्ति 1075 पर फोन कर आयुर्वेदिक चिकित्सकों से परामर्श ले सकता है। कोरोना की बीमारी में आयुर्वेदिक दवाइयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन दवाइयों के प्रभाव को देखते हुए उक्त नंबर पर टेलीमेडिसिन की सुविधा प्रदान की है। उसके लिए कॉल सेंटर बनाया गया है, जहां वरिष्ठ आयुर्वेदिक चिकित्सकों की टीम की ड्यूटी लगा दी गई है जोकि सुबह 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक लोगों को सेवा देंगी।

आयुष मंत्रालय ने होम आइसोलेशन में रह रहे कोरोना के मरीजों की देखभाल के लिए कुछ दिशा निर्देश जारी किए हैं।

बिना लक्षण वाले संक्रमितों के लिए

- गुडुची घन वटी 500 एमजी (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 15 दिन तक लें।
- अश्वगंधा 500 एमजी (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 30 दिन तक लें।
- दो गोली आयुष-64 (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 30 दिन तक लें।

हल्के लक्षण वाले कोरोना संक्रमितों के लिए

- अश्वगंधा 250 एमजी + सौंठ चूर्ण 500 एमजी (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 15 दिन तक
- गुडुची घन वटी 500 एमजी (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 15 दिन तक
- गुडुची 100 एमएल + पीपली चूर्ण 2 ग्राम भोजन से पहले 15 दिन तक (बुखार, सिर दर्द, सूखी खांसी)
- सुदर्शन घन वटी 500 एमजी (दिन में दो बार) गर्म पानी के साथ 15 दिन तक
- नागरादि कषाय 20 एमएल (दिन में दो बार) 15 दिन तक
- खांसी आने पर शहद के साथ 3 ग्राम सितोपलादि चूर्ण (दिन में तीन बार) 15 दिन तक
- स्वाद न आने पर 1-2 गोली व्योषादि की चबाएं।

ये सामान्य उपाय भी जरूरी :

- हल्का गरम पानी पीते रहें।
- खाने में हल्दी जीरा, धनिया, सौंठ और लहसुन का इस्तेमाल करें।
- आंवला या उससे बने सामानों का इस्तेमाल करें।
- गुनगुने पानी में हल्दी और नमक मिलाकर गरारा करें।
- रोजाना 30 मिनट तक योगासन, प्रणायाम और ध्यान करें।
- दिन में दो बार 150 एमएल दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाकर पीएं ।

ये तरीके भी अपना सकते हैं :

- सुबह-शाम नाक में तिल का तेल या नारियल का तेल या गाय का घी डालें।
- गर्म पानी का भाप लें, इसमें पुदिना, अजवाइन, कपूर मिलाकर भी दिन में एक बार भाप ले सकते हैं।
- गले में खराश हो तो लौंग, मुलैठी का पाउडर शक्कर या शहद के साथ मिलाकर ले सकते हैं।

मुख्यमंत्री मुफ्त इलाज योजना के तहत, लोगों को सर्जरी, एक्स-रे, ईसीजी, और अल्ट्रासाउंड सेवाएं, ओपीडी/इनडोर सेवाएं, दवाएं, रेफरल परिवहन और दंत उपचार सेवाएं निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं।

सोनीपत का प्राचीन नाम शोर्णप्रस्थ था। कहा जाता है कि पांडवों ने महाभारत युद्ध को रोकने केलिए जिन पांच पतों की मांग की थी उनमें स्वर्णप्रस्थ भी एक था। इतिहासकारों का कहना है इस नगर की स्थापना 1500ई. पूर्व आर्यो ने की थी।

पौष्टिक हरा चारा अजोला

संगीता शर्मा

रेवाड़ी कारौली गांव के 25 वर्षीय युवक मोनू को गत वर्ष लॉकडाउन के चलते कोई नौकरी नहीं मिली तो उसने अपना पूरा समय खेती को समर्पित कर दिया। सफलता हाथ लगी और आजीविका का साधन मिल गया। आज वह जैविक खेती करके अच्छी आमदनी कमा रहा है। ग्राहक खेतों से ही सब्जियां खरीदकर ले जाते है।

मोनू ने अजोला उगाई है। अजोला पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। इससे दुधारू पशुओं के दूध उत्पादन की क्षमता तो बढ़ती है साथ ही पशुओं की प्रजनन क्षमता भी बढ़ती है। किसान अजोला का उत्पादन करके अच्छी कमाई भी कर रहे है। मोनू ने बताया कि उसके गांव में राजस्थान से लोग आए और उन्होंने 2,600 रुपए की लागत से अजोला का प्लांट तैयार किया। इसकी लंबाई सात फीट और ऊंचाई दस फीट है। इसमें सात-आठ तसला मिट्टी, आधा पानी और गोबर डाला जाता है। पॉलिथीन की मदद से आधा किलो बीज डालकर ढ़क दिया जाता है। लगभग 20-22 दिन में अजोला तैयार हो जाती है। उन्होंने बताया कि अजोला एक अति पोषक छोटा जलीय पौधा है, जो स्थिर पानी में ऊपर तैरता हुआ होता है। अजोला को घर में हौदी बनाकर, तालाबों, झीलों, गड्ढों और धान के खेतों में कही भी उगाया जा सकता है। कई

किसान इसको टबों और ड्रमों में भी उगा रहे हैं। यह पौधा पानी में विकसित होकर मोटी हरी चटाई की तरह दिखने लगती है। सभी प्रकार के पशुओं के साथ-साथ अजोला मछलियों के पोषण के लिए भी बहुत उपयोगी होता है।

उन्होंने बताया कि उनके पास तीन पशु है और सूखी तूड़ी में दो मुट्ठी अजोला मिलाकर पशुओं को खिलाते हैं। आरंभ में पशु ने खाने में आनाकानी की, लेकिन अब अच्छी तरह खा रहे हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान से जो लोग अजोला लगाने आए थे, वह इसको 60 रुपए प्रति किलो के हिसाब से खरीदकर भी ले जा रहे हैं। इससे किसानों की आमदनी बढ़ सकती है।

अजोला में सभी प्रकार के मिनिरल जैसे कैल्शियम, आयरन फास्फोरस, जिंक, कोबाल्ट, मैग्नीजियम के अलावा पर्याप्त मात्रा में विटामिन, प्रोटीन, अमीनों एसिड्स और खनिज होते है। इसको उगाने में किसानों का कोई खर्चा भी नहीं आता है और उसका लाभ भी पशुपालकों को मिलता है। इसको पशुओं को खिलाने से दूध उत्पादन में 10-15 प्रतिशत की वृद्धि होती है।

घीया की बंपर फ़सल

मोनू दो एकड़ में कपास, डेढ़ एकड़ में बाजरा और एक एकड़ में सब्जियों की खेती करते है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष लॉकडाउन के दौरान आधे एकड़ में जैविक सब्जियों की

खेती की और उससे अधिक मुनाफ़ा हुआ। इसी कारण इस बार उन्होंने एक एकड़ में सब्जियों की खेती की है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष घीया की बंपर पैदावार हुई। हाईब्रिड माही-8 किस्म की घीया उगाई और एक दिन में 60-70 घीया की पैदावार होती थी। खेतों से ही ग्राहक खरीदकर ले जाते थे और जो कुछ बचता था उसे स्थानीय दुकानदारों को बेचते थे। 10 से 30 रुपए प्रति किलो की दर से घीया ख़ूब बिका। इस बार भी घीया की अच्छी पैदावार हो रही है।

लाल भिंडी की कीमत अधिक

मोनू ने इस बार लाल रंग की भिंडी उगाई है और इसकी पैदावार होनी शुरू हो गई है। इसके पत्ते और भिंडी दोनों लाल रंग की है। इसके बीज ऑनलाइन बिकते हैं और स्पीड पोस्ट के माध्यम से पोस्ट ऑफिस में आते हैं। उन्होंने बताया कि लाल रंग की भिंडी की मांग अधिक है और यह सामान्य भिंडी के मुकाबले 20-30 रुपए प्रति किलो की ज़्यादा बिकती है। उन्होंने बताया कि मिर्च व मटर की फसल से भी अच्छा मुनाफ़ा कमा लेते हैं।

वीटा के बूथों पर भुगतान के लिए 'वीटापे'

हरियाणा डेयरी विकास सहकारी प्रसंघ ने कोरोना वायरस महामारी के कारण लोगों पर पड़ रहे प्रभावों को कम करने के लिए एक बड़ी पहल करते हुए अपने डेयरी किसानों और वीटा बूथों के लिए एक डिजिटल भुगतान वॉलेट ''वीटापे'' शुरू किया है।

प्रसंघ के प्रबंध निदेशक ए.श्रीनिवास ने बताया कि वर्तमान कोविड संकट में दैनिक आधार पर भौतिक रूप से नकदी लेन-देन को संक्रमण फैलने का एक प्रमुख कारक माना जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे में डेयरी किसानों, वीटा बूथ और अन्य सहयोगियों के लिए एक समर्पित वॉलेट 'वीटापे' प्रसंघ के कामकाज, सेवाओं, बाज़ार में उपस्थिति को बढ़ावा देने के साथ-साथ बूथ मालिकों को अतिरिक्त आय अर्जित करने में भी मदद करेगे।

श्रीनिवास ने कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य डिजिटल भुगतानों का विस्तार करना, अंतिम छोर तक वित्तीय समावेशन को प्राप्त करना, समितियों के समग्र राजस्व में वृद्धि करने के साथ-साथ लाखों अनबैंक्ड और अंडरबैंक्ड डेयरी किसानों के लिए अनेक वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करवाना है। उन्होंने कहा कि प्रसंघ द्वारा की गई यह पहल अधिक से अधिक किसानों को आईएमपीएस, एनईएफटी और डीएमटी जैसे भुगतान विधियों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगी।

सिंधु बॉर्डर के आसपास के किसान - हो रहे धनवान

'सिंधु बॉर्डर' किसान आंदोलन को लेकर बेशक चर्चा में है लेकिन यहां आसपास के अनेक गांवों के किसान अपने को आंदोलन से दूर रखकर खेती-किसानी में नित नए प्रयोग कर रहे हैं। ये सभी किसान परंपरागत कृषि से हटकर फूलों और मशरूम की खेती करके न सिर्फ अच्छा पैसा कमा रहे है बल्कि अन्य किसानों के लिए प्रेरक भी सिद्ध हो रहे हैं।

दहीसरा गांव (सोनीपत) के ही रहने वाले किसान कमल सिंह चौहान भी उन किसानों में शामिल हैं, जो लीक से हटकर कुछ करने में विश्वास रखते हैं। वे इन दिनों परंपरागत खेती के साथ मछली पालन कर रहे है। इनके पास 12 एकड़ ज़मीन है। इनमें से डेढ़ एकड़ ज़मीन में उन्होंने आठ फुट तक गहरा तालाब खुदवा कर उसमें मछली पाल रहे हैं। कमल कहते है, ''लॉकडाउन से पहले तक मैं दिल्ली के केशोपुर मंडी में आढ़ती का काम करता था। लॉकडाउन के कारण वह काम बंद हो गया। कुछ दिन पहले किसी ने बताया कि हरियाणा का मत्स्य विभाग सोनीपत में किसानों को मछली पालन का प्रशिक्षण दे रहा है। मैंने भी वहां मछली पालन का प्रशिक्षण लिया और अब पूरा मन उसी काम में लगा है।'' प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने पांच लाख रुपए खर्च करके अपने खेत में तालाब बनवाया और इसके बाद मछली पालन शुरू कर दिया। इस कार्य में उन्हें हरियाणा सरकार की ओर से 3,42,000 रु. की मदद भी मिली है। इस तरह उन्हें अपनी जेब से केवल 1,58,000 रु. खर्च करने पड़े हैं। तालाब में इठलाती मछलियों को देखकर कमल बहुत खुश होते हैं और कहते हैं, 'इस बार करीब लगभग अढाई लाख रुपए का बिज़नेस हो सकता है।'

योगेश ने बनाया 'पॉली ग्रीन हाउस'

दहीसरा गांव के किसान योगेश चौहान। कुछ समय पहले तक ये खेती के अलावा कृषि में काम आने वाली मशीन चलाते थे। किसी कारणवश उन्होंने मशीन का काम छोड़ दिया और सिर्फ खेती ही करने लगे, लेकिन आमदनी इतनी कम कि परिवार की ज़रूरतों को पूरा करना भी भारी हो रहा था। इसके बाद उन्होंने नई तकनीक से खेती करने का विचार किया। सबसे पहले उन्होंने एक एकड़ जमीन पर 18,00,000 रु. की लागत से 'पॉली ग्रीन हाउस' बनवाया। ताकि पौधों को पूरी

तरह से ढक कर और अधिक गर्मी और कीड़ों से बचाया जा सके। पहले उन्होंने वहां उत्तम किस्म के बीज से खीरे की बेल तैयार की। इसके बाद उन्होंने 'पॉली ग्रीन हाउस' के अंदर लगभग 30,000 बेल लगवाई। एक बेल में एक बार में 50 से अधिक खीरे तैयार हो रहे हैं। वे रोजाना लगभग तीन क्विंटल खीरा बेच रहे हैं।

योगेश कहते है, ''किसान को तकनीक के साथ चलना ही होगा, नहीं तो ज़मीन रहते हुए भी अभाव का जीवन जीना होगा। ''ग्रीन हाउस तैयार करने में सरकार मदद करती है। इसलिए किसान को ग्रीन हाउस वाली खेती पर ज़ोर देना चाहिए। इससे पानी की बचत के साथ पौधे की उम्र भी लंबी होती है। जब पौधा ज्यादा समय तक रहेगा तो फल भी ज्यादा वक्त तक मिलेगा। यानी एक जोत में ही किसान लंबे समय तक उत्पादन कर सकता है। इससे किसान की लागत कम होती है और किसान की लागत कम होने का मतलब है उसकी आमदनी बढ़ेगी।'' उल्लेखनीय है कि 'पॉली ग्रीन हाउस' में पौधों की ड्रिप सिंचाई होती है।

-सुरेंद्र बांसल

आम, अमरूद और सिट्रस फलों के बागों पर सब्सिडी की सीमा 16,000 रुपए से बढ़ाकर 20,000 रुपए प्रति एकड़ की गई है। अमरूद के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की पहल पर एनीमिया मुक्त भारत कार्यक्रम के तहत हरियाणा को देश के 29 राज्यों की सूची में पहला स्थान मिला है।

हाथों हाथ बिक रहे हैं जैविक उत्पाद

मनोज चौहान

किसान अपने उत्पाद की ब्रांडिंग के साथ-साथ मार्केटिंग कर रहे है। जिससे किसानों को अधिक मुनाफा मिल रहा है। ऐसे ही लाडवा के मेहरा गांव के किसान सतपाल आर्य हैं। जो चार एकड़ में नैचुरल फार्मिंग से गेहूं, धान, गन्ना, हल्दी और दालें उगाते है। इनके गुड़, शक्कर और हल्दी की डिमांड इतनी अधिक है कि घर से ही बिक जाती है। सतपाल आर्य प्राकृतिक खेती के बलबूते आज लाखों कमा रहे है।

नैचुरल फार्मिंग स्वास्थ्य और मुनाफा दोनों देती है। सतपाल आर्य ने इस बात को साबित किया है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती की शुरूआत दोस्त के भाई को कैंसर होने के बाद 2006 में हुई। घर के लिए साग-सब्जी हो जाए, थोड़ी जमीन पर नैचुरल फार्मिंग करने लगे। लेकिन गाय आधारित खेती के उत्पाद के स्वाद ने इसकी मांग बढ़ा दी। मांग की अधिकता पर चार एकड़ में प्राकृतिक तरीके गेहूं, धान, गन्ना, हल्दी और दालों को उगाते हैं।

सतपाल आर्य ने प्राकृतिक खेती के गुर, पद्मश्री सुभाष पालेकर से लिये। जिसके लिए महाराष्ट्र में एक सप्ताह ट्रेनिंग की। उन्होंने गाय आधारित खेती का लाभ बताते हुए बताया कि पिछले साल मार्च महीने में लॉकडाउन लगा था। उस सीजन 15 क्विंटल गुड़ और शक्कर निकाला। सप्ताह भर में गुड़ और शक्कर बिक गया। गेहूं भी मंडी ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती। घर से ही पांच हजार प्रति क्विंटल के हिसाब से गेहूं बिक जाता है।

सतपाल आर्य का उत्पाद मार्केट से डबल दाम पर बिकता है। गुड़ 90, शक्कर सौ, हल्दी 300, आलू 30 और चावल 120 रुपए प्रति किलो के हिसाब से बिकता है। सतपाल आर्य ने बताया कि इस बार सवा एकड़ में गन्ना लगाया था। 45 क्विंटल गुड़ और शक्कर निकला। डेढ़ लाख खर्च निकाल कर सवा दो लाख का मुनाफा हुआ।

सतपाल आर्य को लाडवा कृषि विभाग द्वारा प्राकृतिक खेती के लिए प्रगतिशील किसान के पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। इसके लिए उन्हें विभाग द्वारा प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार राशि दी गई है।

मांग के अनुसार पैकिंग

किसान सतपाल चावल, हल्दी, गुड़, शक्कर, सिरका की पैकिंग करते हैं। उपभोक्ता की मांग के अनुसार ही पैकिंग की जाती है। उन्होंने बताया कि आस-पास के गांव के लोग तो लेकर जाते ही हैं पंचकूला, करनाल, रोहतक और कुरुक्षेत्र से भी ग्राहक पहले से बुकिंग करा देते हैं।

कैसे करते है प्राकृतिक खेती

किसान सतपाल आर्य खेतों में देसी गाय के गोबर और मूत्र से बनी खाद ही इस्तेमाल करते हैं। जिससे भूमि की उपजाऊ क्षमता मजबूत हुई। खेतों में जीवा अमृत और घन जीवा अमृत डाली जाती है। खाद को बनाने की विधि बेहद सरल है। 10 किलो गाय का गोबर, 10 लीटर मूत्र, एक किलो गुड़, एक किलो बेसन और एक किलो बड़ या पीपल के पेड़ की मिट्टी को 2 सौ लीटर पानी में तीन से चार दिन रखा जाता है। जिसे क्लोक और एंटी क्लोक वाइज घुमाया जाता है। इसी मिश्रण को सुखाने से घन जीवाअमृत बनता है। पौधों में किसी प्रकार की बीमारी ने लगे, निमास्त्र और अग्निमास्त्र का छिड़काव किया जाता है। नीम के पत्ते, पान फूल, हरड़ और धतुरा को गोमूत्र में पकाया जाता है। चार सौ एमएल प्रति टेंक के हिसाब से पौधों पर छिड़काव किया जाता है।

पुष्कर तीर्थ

जहां सहस्त्रबाहु ने तीर से रेणुका की मटकी तोड़ी

48कोसिय कुरुक्षेत्र भूमि का सौंदर्यीकरण प्रदेश सरकार द्वारा किया जा रहा है। जींद के पुष्कर और अश्वनी कुमार तीर्थ का कायापलट हो चुका है। नौ स्थलों का कार्य प्रगति पर है। वहीं अन्य तीर्थों पर सर्वे के आधार पर कार्य किया जाएगा।

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के मानद सचिव मदन मोहन छाबड़ा ने कहा कि सरकार का लक्ष्य 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि को पर्यटन के रूप में विकसित करना है। जो पर्यटन की दृष्टि से मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट में भी शामिल है। इसलिए सभी तीर्थों पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करवाए जाएंगे। जींद जिले में महाभारत कालीन 17 पवित्र तीर्थ स्थल है। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड जिनके जीर्णोद्धार में लगी है। उन्होंने कहा 11 तीर्थों पर विकास के कार्य प्रगति पर है।

पुष्कर तीर्थ जींद-हांसी मार्ग पर जींद से 14 किलोमीटर दूर पोकरी खेड़ी ग्राम में स्थित है। पर्यटकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इस दृष्टि से तीर्थ पर कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा पार्किंग और टॉयलेट ब्लॉक बनवाए गए हैं। छाबड़ा ने कहा कि तीर्थ पर हर महीने शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मेला लगता है। श्रद्धालुओं को स्नान-ध्यान की सुविधा के लिए महिला एवं पुरुष घाट बनवाए हैं और तीर्थ पर लाइटिंग की व्यवस्था की गई।

पुष्कर तीर्थ का उल्लेख वामन पुराण, पदम पुराम तथा महाभारत में मिलता है। कहते है तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य के सम्पूर्ण मनोरथ पूरे होते हैं और अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

दन्त कथाओं के अनुसार महर्षि जमदग्नि की पत्नी रेणुका हर दिन पुष्कर तीर्थ के जल से स्नान करके ऋषि के लिए जल लाती थी। एक बार जब रेणुका पुष्कर तीर्थ से जल ला रही थी। तब सहस्त्रबाहु ने उनकी मटकी को तीर मारकर तोड़ दिया। रेणुका ने जमदग्नि ऋषि को देरी का कारण बताया। ऋषि ने कहा, जिस स्थान पर पानी की मटकी टूटी वही पुष्कर तीर्थ बन जायेगा। तभी से यहां पर पुष्कर तीर्थ बन गया।

महाभारत और वामन पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र की सीमा के चार द्वारपाल थे जिन्हें तरन्तुक, अरन्तुक, रामहद और मचक्रुक यक्ष कहा जाता है। पुष्कर तीर्थ को परिवर्तित नाम रामहद तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है। रामहद का शाब्दिक अभिप्राय परशुराम द्वारा निर्मित सरोवर है। जिसे पहले कपिल यक्ष कहा जाता था। वामन पुराण में भी इस बात की पुष्टि हुई है। द्वारपाल के रूप में स्थित कपिल यक्ष दुष्टों के मार्ग में विघ्न डालकर उन्हें दुर्गति प्रदान करते है।

-मनोज चौहान

लोक साहित्य में लोक जीवन

किसी भी भाषा के साहित्य का मार्ग लोक के रास्ते ही जाता है, किन्तु जब हम लोक साहित्य की बात करते है तो 'लोक' शब्द में समाज का वह वर्ग आता है जो प्रकृति की लय गुनगुनाता है और अपने जीवन की बोझिलता को खत्म करता है। लोकसाहित्य का अर्थ मात्र ग्राम्य नहीं, बल्कि गांवों से नगरों तक फैली वह वाचिक परम्परा है,जिसका आधार पीढ़ी दर पीढ़ी मिला लोकज्ञान है। लोक विश्वास, लोक कलाएं, लोक परिवेश एवं लोकभाषा ही लोक संस्कृति और लोक साहित्य का निर्माण करती हैं। और लोक साहित्य में लोगों के सुख -दुःख गुंथे होते है।

हरियाणा का लोक साहित्य बेहद समृद्ध है, जो गाँव के चौपाल, चबूतरे, चौक चौराहे, कुंए-बावड़ी, सर -सरोवर, खेत -खलिहान तथा आंगन-दालान में मौखिक रूप से सतत रचा जाता रहा है।

हरियाणवी बोली हिंदी की सहभाषा है। कुछ विद्वान इसे हिंदी की पड़नानी भी कहते हैं। इसमें मेवाती, कौरवी, बागड़ी, बांगरू और अहीरवाटी कई उपबोलियों का मिश्रण है । हरियाणवी बोली की व्युत्पत्ति अन्य भाषाओं की भांति अपभ्रंश से न होकर सीधे प्राकृत भाषा से हुई है। हरियाणवी में प्रयुक्त होने वाली लगभग आठ सौ धातुओं में से भी अस्सी प्रतिशत मूलतः संस्कृत की हैं। सरस्वती सिंचित हरियाणा की पावन धरा को वेद, पुराण, महाभारत, गीता जैसी कालजयी ग्रंथों की सृजन स्थली होने का गौरव प्राप्त है।

वैदिक, मनु, बौद्ध, जैन, शैव, शैव-शाक्त तथा मध्यकालीन संत दर्शनों के प्रभाव से हरियाणा में एक ऐसी जीवन -पद्धति पनपी, जिससे इस भूमि पर विरले लोक साहित्य का जन्म हुआ। यहां के धरती पुत्रों ने विभिन्न लोकविधाओं में अद्भुत रचनाएं प्रस्तुत की, जिनमें यहां के लोकजीवन की सामाजिक, पारम्परिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति को जाना और समझा जा सकता है। वास्तव में लोक साहित्य को प्रदेश की आत्मा का प्रतिबिम्ब भी होता है और प्राण भी।

हरियाणा के लोक साहित्य में पग-पग पर लोक जीवन की झलक मिलती है, जिसमें प्रत्येक काल के हरियाणवी समाज के आचार -विचार,राग -द्वेष, सुख -दुःख, पहनावा, खान -पान, रहन -सहन को देखा जा सकता है।

इस सबकी झलक लोक नाट्य , मौंग, नौटंकी, लोक गीतों , लोक गाथाओं ,लोक काव्य, लोक दोहा,लोक पहेली, लोकसूक्ति, लोक कहावतों आदि में समाहित है। इन सबमें लोकप्रिय लोकगीत विधा की अमिट छाप जनमानस पर स्पष्ट दिखाई देती है जिसमें लय और ताल से भरपूर नृत्य - गीतों संगीत की छटा ही निराली है। इन लोकगीतों में हरियाणवी परिवेश के संस्कार परम्परा, शौर्य , सांझी, पनघट, चरखा, आयुर्वेद परम्पराओं के अनेकों गीत समाहित है।

हरियाणवी लोक साहित्य में आयुर्वेद चिकित्सा के गीतों, दोहों एवं कहावतों, लोकोक्तियों, नुस्खों की बहुलता से अटा पड़ा है। इनमें प्रदेश के शाकाहारी आहार सम्बंधित अनंत जानकारियां पिरोई गयी हैं, जिनमें इस बात का वर्णन है कि किस समय, क्या और कितना खाना चाहिए ताकि हमारा स्वास्थ्य ठीक रहे। करोना महामारी काल में अब विश्व भर में शुद्ध खानपान और सादा जीवन पद्धति की चर्चा जोरों पर है, क्योंकि इसी शाकाहारी खानपान और जीवन पद्धति में प्रतिरोधक क्षमता छिपी है।

हल्के स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस की हवा से हवा में मार कर सकने वाली हथियार प्रणाली में पांचवी पीढ़ी की मिसाइल पाईथन-05 जुड़ गई है। गोवा में इसका सफल परीक्षण किया गया। डीआरडीओ इसकी जानकारी दी।

भारतीय नौसेना ने हाल ही में ऑपरेशन समुद्र सेतु-2 लांच किया है। यह ऑपरेशन देश की ऑक्सीजन आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करेगा।

43 लाख रुपए चंदा एकत्र कर बनवाया पेयजल घर

सीवरेज के पानी के निपटान के लिए सोख्ता तकनीक ने बदली बनावाली गांव की तस्वीर

पानी की एक-एक बूंद सहेजना आज समय की जरूरत है। फतेहाबाद का गांव बनावाली सोतर घर में उपयोग पानी को बचाकर, जल संरक्षण की अनूठी मिशाल पेश कर रहा है। यहां के हर घर में साकेट पीट बना है। इससे बेकार पानी का निपटारा तो हुआ। रिफलिंग होकर भूमिगत जल स्तर बढ़ा है।

दूषित जल का पान करने से ग्रामीणों में पेट के रोग आम समस्या थी। ग्रामीणों को स्वच्छ व नहरी पानी मिले, इसके लिए पंचायत ने पीडब्ल्यूडी विभाग के समक्ष समस्या रखी। विभाग ने जलघर

किस तरह काम करता है सोख्ता गढ्डा

सोख्ता गढ्डा घर में एक उचित स्थान पर बनाया जाता है, जहां घर के पानी की निकासी होती है। यह सोख्ता गढ्डा 35 फीट गहरा और ढाई फीट चौड़ा बनाया गया है। गढ्डे के चारों ओर पत्थर के कंडे लगाए गए हैं ताकि गढ्डे को मिट्टी के भरने से बचाया जा सके। इसे नीचे से कच्चा रखा जाता है और ब्लॉकेज रोकने के लिए गढ्डे के ऊपर लोहे की जाली लगाई गई है।

सोख्ता गढ्डा से बढ़ रहा भूमिगत जलस्तर

बनावाली सोतर के ग्रामीण दूषित जल से होने वाली समस्या से भली-भांति परिचित थे। पंचायत द्वारा हर घर में सोख्ता गढ्डा बनाया गया। इस प्रणाली से घर का पानी बेकार नहीं जाता। सरपंच हरजिंद ने कहा कि सोख्ता गढ्डा से पानी जमीन में चला जाता है और पानी रिफिलिंग होकर, भूमिगत जलस्तर भी बढ़ा रहा है। इसलिए गांव की गलियां साफ सुथरी और नाली रहित हैं। गांव में नालियां न होने की वजह से गांव के जोहड़ का जल साफ रहता है और पशुओं को भी शुद्ध जल मिल रहा है। वॉटर कंजरवेशन के लिए प्रशासन द्वारा गांव को पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति पत्र और 20 हजार रुपए मिले हैं।

विभाग द्वारा लोगों को किया जाता है जागरूक

चंद शर्मा, जिला सलाहकार, जन स्वास्थ्य अभियंत्रिकी विभाग, फतेहाबाद ने बताया कि विभाग द्वारा समय-समय पर जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक किया जाता है। गांव बनावाली सोतर में जल अशुद्धता की समस्या विकट थी। विभाग द्वारा नहर से गांव में पानी पहुंचाया गया। जिसमें गांव का पूर्ण सहयोग रहा। उन्होंने कहा कि गांव का हर घर नल युक्त है और सबको शुद्ध जल उपलब्ध हो रहा है।

के लिए जमीन गांव द्वारा उपलब्ध कराने की बात कही।

सरपंच हरजीद ने बताया कि गांव के पास अपनी कोई जमीन नहीं थी। गांव की पंचायत सभा बुलाई गई। जिसमें हर घर से 5000 रुपए एकत्रित करने पर सहमति बनी। किसी ने पांच हजार तो किसी ने लाख रुपए भी दिये और इस तरह 43 लाख रुपया इक्ट्ठा हो गया। इस पैसे से तीन एकड़ जमीन खरीदी गई। जिस पर पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा जलघर बनाकर नहरी जल से सप्लाई दे दी। आज बनावाली के बशिंदों को शुद्ध पेयजल मिल रहा है।

हर घर में एक समान रूप से पानी पहुंचा है। सबसे पहले पानी गांव के आखिरी घर पर पहुंचता है। पंचायत ने सभी कनेक्शन तकनीकि दृष्टि से लगाए हैं। इसलिए गांव के एक-एक घर में पानी एक समान प्रेशर से पहुंचता है।

-मनोज चौहान

स्वयं सहायता समूह बनाकर महिलाएं हुई आत्मनिर्भर

हिसार के मंगाली मोहबत गांव की आंगनवाड़ी वर्कर व भारती फाउंडेशन की अध्यक्ष सुमित्रा देवी स्वयं सहायता समूह के माध्यम से न केवल महिलाओं को प्रशिक्षण दे रही हैं, बल्कि स्वयं रोज़गार से उन्हें आत्मनिर्भर बना रही हैं। वह दादरी, भिवानी, जींद, हिसार व फतेहाबाद जिले में 1,500 स्वयं सहायता समूह का गठन कर चुकी हैं, जिसके अंतर्गत 15,000 महिलाओं को जोड़ा गया है।

सुमित्रा अपने जीवन में अख़बार, पुस्तकों व मैगजीन को विशेष महत्त्व देती है। इनमें सकारात्मक व उपलब्धि भरी कहानियां पढ़कर प्रेरणा लेती है और जीवन के लक्ष्य निर्धारित करती है। वह आपको खुशकिस्मत मानती है कि जब वह बीपीएल कार्ड के माध्यम से घर के लिए अप्लाई करने गई तो ऑफिसर ने उनको देखकर कहा कि वह बीपीएल श्रेणी की नहीं लगती और उसे एक पुस्तक दी, जिसमें महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाकर आत्मनिर्भर बनने की जानकारी थी। आंगनबाड़ी के लिए पंजीरी बनाने का प्रोजेक्ट भी ऑफिसर ने दिया और सुमित्रा ने महिलाओं को एकत्रित करके काम किया। उसने बताया कि आंगनवाड़ी वर्कर बनने से जीवन में बदलाव आया और स्वयं सहायता समूह से उसकी जिंदगी तरक्की के पथ पर अग्रसर हुई। सुमित्रा ने बताया कि पुस्तक पढ़कर उसने महिलाओं के समूह बनाने शुरू किए और आरंभ में 18 किलोमीटर पैदल चलकर भी महिलाओं को एकत्रित किया। इस समय उन्होंने पंचायत घर में कमरे किराये पर लेकर ऑफिस बनाया है और आठ-दस कमरे भी है जहां महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। सुमित्रा ने बताया कि वह केंद्र सरकार के एक प्रोजेक्ट के अंतर्गत महिलाओं को एकत्रित कर रही हैं।

महिलाओं को बनाया आत्मनिर्भर

50 वर्षीय सुमित्रा ने बताया कि वर्ष 2000 में दस महिलाओं को 'जागृति' महिला समूह का गठन किया था और उनके समूह ने आरंभ में 25,000 सरकारी ऋण लेकर लकड़ी के मणके बनाने की मशीन ली और कार के सीट कवर व अन्य सजावटी सामान बनाकर बेचना शुरू किया। बाद में अढ़ाई लाख रुपए का ऋण लेकर महिलाओं ने अपने-अपने घर में मणके की मशीन खरीद ली और अब महिलाएं घर से ही अपना काम करती हैं। उन्होंने बताया कि दस महिलाओं से शुरू हुआ कारवां अब बढ़ कर 15,000 तक पहुंच गया है। उन्होंने सरकारी योजनाओं का फ़ायदा उठाकर महिलाओं को प्रशिक्षण दिया और स्वयं रोज़गार के लिए तैयार किया। उन्होंने बताया कि नाबार्ड की मदद से भी समूह बनाकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया। उनके समूह की महिलाएं डेयरी फार्मिंग, ब्यूटीक, ब्यूटीपार्लर, कंप्यूटर सेंटर खोलकर अच्छा ख़ासा कमा रही हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएं चूड़ियां, सीनरी, जूड़ा पिन, कढ़ाई का काम, क्रोशिया, मोमबत्ती, सजावटी सामान व आचार आदि उत्पादों को रिटेल विक्रेताओं को बेचकर रुपए कमा रही हैं। उन्होंने बताया कि दिल्ली, मुंबई, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश व हरियाणा में प्रदर्शनियों व मेले में उत्पाद बेचकर एक लाख से दो लाख रुपए कमा लेते हैं। इन रुपयों को महिलाओं में बांट दिया जाता है। सुमित्रा को वर्ष 2012 में पाकिस्तान में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के उत्पाद को प्रदर्शित करने का मौका मिला और उनके उत्पाद की काफ़ी सराहना की गई।

भ्रमण का अवसर

वह बताती है कि 'आत्मा' योजना के अंतर्गत महिलाओं को कुल्लू मनाली, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर व अन्य शहरों में घूमने का मौका मिला। उनका कहना है कि महिलाएं जब घर से बाहर घूमने निकलती है तो बहुत सुकून महसूस करती है और कई महिलाओं का कहना था कि घर में बैठकर हम तनावग्रस्त हो गए थे और अब राहत मिली है। इसके साथ ही हमें बहुत कुछ नया सीखने व जानने का मौका मिला है। सुमित्रा ने 'मिड डे मिल' के माध्यम से कई बेरोज़गार महिलाओं को रोज़गार दिया।

सुमित्रा का सिर गर्व से ऊंचा उठ जाता है जब महिलाएं उन्हें आकर कहती है कि आप हमारे मार्गदर्शक हो और आपने हमें आत्मनिर्भर बनाया है। अब हम अपने परिवार को आर्थिक रूप से मज़बूत करने में योगदान दे रही हैं।

टीकाकरण के लिए जागरूक

सुमित्रा ने बताया कि कोरोना काल के दौरान उन्होंने अपने आस-पास के 11 गांवों में ज़रूरतमंदों को मास्क, सेनेटाइजर व भोजन सामग्री उपलब्ध करवाई। अब घरों में जाकर कोरोना टीकाकरण अभियान के प्रति बड़े-बुज़ुर्गों को जागरूक कर रही हैं, जिसके कारण अब लोग इंजेक्शन लगाने से ना-नुकर नहीं कर रहे हैं। कहने का अभिप्राय: यह भी है कि समूह से जुड़ी महिलाओं के पास इधर उधर की बातें करने का समय नहीं होता।

जैविक खेती से भी आमदनी

स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए। अपनी तीनों बेटियों व बेटे को उच्च शिक्षित करके अच्छे संस्कार दिए। उन्होंने बताया कि एक बेटी फुटबाल की अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी है और बेटा रक्षा मंत्रालय ऑडिटर के पद पर कार्यरत है। उसने बताया कि अपने बच्चों को समय पर शादी कर दी और बेटियों को आत्मनिर्भर बनाया है। सुमित्रा समाजसेवा के साथ-साथ जैविक सब्जियों की खेती भी करती है। दो एकड़ ज़मीन पर घीया, मिर्च, मूली, गेहूं व सरसों की खेती करती हैं।

-संगीता शर्मा

डॉ अमित अग्रवाल, भा.प्र.से. प्रबंध निदेशक, संवाद (सूचना जन संपर्क एवं भाषा विभाग) हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।
कार्यालय : संवाद सोसायटी एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़ फोन : 0172-2723814, 2723812 email : editorsamvad@gmail.com